1962F Kanji Swami - As I saw him

Jaisa Maine Dekha (In Sanmati Sandesh May, 1962)

जैसा मैंने देखा

श्री पं० हीरालाल, सिद्धान्तशास्त्री

यद्यपि श्री कानजी स्वामी के दर्शन करने और उनके प्रवचन सुनने का सुअवसर आज से १४ वर्ष पूर्व सोनगढ़ में ही मिला था, परन्तु अति सन्निकट से उन्हें देखने और परखने का अवसर उस समय मिला, जब वे श्री सम्मेदशिखर जी की यात्रा से लौटते हुए श्री वीर सेवा मन्दिर दिल्ली में ठहरे थे। उस समय मैंने देखा कि उनकी मानस, वाणी और काय में एकरूपता है, जो कि उनके महात्मापने की सूचक है। उनमें समुद्र सी गम्भीरता और सुमेरु सी स्थिरता है, जो उनके बड़प्पन की द्योतक है और उनकी प्रशान्त एवं सौम्यमुद्रा उनके आन्तरिक प्रशमभाव को प्रकट करती है।

मैंने देखा कि वे जिस दृढ़ता के साथ अध्यात्म तत्व का प्रतिपादन करते हैं, उतनी ही सरलता के साथ समागत बन्धुओं के साथ बात-चीत भी करते हैं। वार्तालाप करते समय सामनेवाला व्यक्ति यह अनुभव किये बिना नहीं रह सकता कि उनके मानस में अध्यात्म गंगा प्रवाहित हो रही है और वे उसमें अवगाहन करते, डुबकियां लेते और गोते खाते हुए मानों बीच-बीच में सामनेवाले व्यक्ति से वार्तालाप करते जा रहे हैं। उनकी इस प्रवृत्ति से उनके संवेग और आस्तिक्यभावकी छाप हृदय पर सहज में ही अंकित हो जाती है।

मैंने देखा कि वे सोते समय भी अत्यन्त शान्त वातावरण चाहते हैं, मानो उस समय भी वे अपनी प्रवाहमान शान्ति की धारा से एक क्षण के लिए भी वंचित नहीं रहना चाहते।

प्रवचन के समय आपकी मुखमुद्रा और भाव-भंगिमा देखने योग्य होती है। किसी गूढ़ तत्वका विश्लेषण करते हुए आपके हाथ की अंगुलियाँ श्रोताजनों को मानों अध्यात्मतत्वकी परिगणना करती कराती सी प्रतीत होती हैं। प्रवचन करते हुए आप श्रोताजनों को सावधान करने के लिए नामोल्लेख पूर्वक सम्बोधित करते रहते हैं, जिससे ज्ञात होता है कि आप आध्यात्मिकता के सजग प्रहरी हैं।

अधिकांश जैनसमाज धर्मसाधन करते एवं पुण्य-कार्योंको सम्पादित करते हुए भी अपनी उस चिर-कालीन भूल को नहीं समझ सका था, जिसके कारण कि वह आज तक भव-वनमें भटकता आ रहा है। आपने लोगों की उस 'मूल में भूल' को बतलाकर उन्हें सही दिशा का भान कराया है और करा रहे हैं।

अध्यात्म जैसे गहन, सूक्ष्म एवं रूक्ष विषय को आप जिस सरलता, सरसता और स्वभाविकता के साथ समझाते हैं, उससे वह श्रोताजनों के मानस-पटल पर सहज में ही अंकित होता जाता है। अध्यात्म-तत्वकी यह सुगम अभिव्यक्तिही आपके प्रभावशाली अनोखे अनुपम व्यक्तित्व को व्यक्त करती है। जिसने कभी अध्यात्म की चर्चा भी नहीं सुनी, ऐसे अनेक जैनेतर व्यक्ति भी आपके आध्यात्मिक प्रवचन सुनकर अध्यात्मगंगा में गोते लगाने लगते हैं। मैंने अपने जीवन में ऐसा प्रभावशाली अनोखा व्यक्तित्व अन्यत्र कहीं नहीं देखा।

आपको ७३वें वर्ष में प्रवेश करने पर हम आपको बधाई देते हैं और मंगल-कामना करते हैं कि आप शतायुर्जीवी होवें।

युगप्रवर्तक

(श्री बाबूलाल पाटोदी, M. L. A. (म. प्र.) इंदौर)

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि सन्मति सन्देश पूज्य कानजीस्वामी की ७३वीं वर्षगांठ के उपलक्ष में विशेषांक प्रकाशित कर रहा है।

पूज्य कानजीस्वामी अहिंसादर्शन के महान् प्रचारक, सौम्यमूर्ति, अनेकान्तके पथप्रदर्शक व आज के युग के महान् सन्त हैं। सोनगढ़ जाने पर व्यक्ति को जो अपूर्व शान्तिकी अनुभूति होती है, वह सच-मुच ही आजके विज्ञानवादी युग पर आध्यात्मिकता की विजय है।

पूज्य कानजीस्वामी का सम्यक्त्व का उपदेश मानवमात्रके लिये कल्याणकारी हो, यही भावना है।

मैं आपके प्रयास की हृदय से सफलता चाहता हूँ।